NEP 2020 के अंतर्गत बहु विषयक शिक्षा एवं स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण का अध्ययन: एक सहसंबंधात्मक अध्ययन

शोधकर्ता

डॉ. दीपा बलखंडे

प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, श्रीमती बिंझानी महिला महाविद्यालय, नागपुर

Crossref DOI - https://doi.org/10.5281/zenodo.23593036

सारांश :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, विद्यार्थी-केंद्रित एवं बहु विषयक बनाने पर बल देती है। बहु विषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों एवं दृष्टिकोणों से सीखने के अवसर प्रदान करती है, जो उनके व्यक्तिगत विकास, स्वायत्तता एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण से संबंधित हो सकते हैं। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य NEP 2020 के अंतर्गत बहु विषयक शिक्षा एवं स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध का अध्ययन करना है। प्रस्तावित अध्ययन में 18–25 वर्ष आयु वर्ग के 200 स्नातक विद्यार्थियों को शामिल किया जाएगा। कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकायों से विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत नमूना चयन पद्धति द्वारा किया गया। बहुविषयक शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण के मापन हेतु उपयुक्त मनोवैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन तथा पियर्सन का गुणनफल-क्षण सहसंबंध गुणांक (Pearson's Product-Moment Correlation Coefficient) द्वारा किया गया। यह अध्ययन NEP 2020 की बहु विषयक शिक्षा को केवल पाठ्यक्रमीय परिवर्तन के रूप में न देखकर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक विकास एवं कल्याण के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। $N = 200$ रखा गया, और $r = 0.42$ आया है ,$p < .001$, इसलिए इसे सांख्यिकीय रूप से सार्थक सकारात्मक सहसंबंध के रूप में दिखाई दिया।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बहुविषयक शिक्षा, मनोवैज्ञानिक कल्याण, स्नातक विद्यार्थी, उच्च शिक्षा, सहसंबंधात्मक अध्ययन

प्रस्तावना :

शिक्षा का उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक विकास को बढ़ावा देना भी है। वर्तमान समय की जटिल सामाजिक समस्याओं को समझने के लिए विभिन्न विषयों के ज्ञान का समन्वय आवश्यक है। इसी संदर्भ में **NEP 2020** उच्च शिक्षा में बहुविषयक, लचीली, समग्र एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा पर बल देती है। बहु विषयक शिक्षा विद्यार्थियों को

विभिन्न विषयों एवं दृष्टिकोणों से सीखने के अवसर प्रदान करती है, जो उनके व्यक्तिगत विकास एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण से संबंधित हो सकते हैं।

NEP 2020 एवं बहु विषयक शिक्षा :

NEP 2020 उच्च शिक्षा में विभिन्न विषयों के बीच समन्वय तथा विद्यार्थियों को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार विषय चुनने के अवसर प्रदान करने पर बल देती है। बहु विषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों एवं दृष्टिकोणों को जोड़कर सीखने में सहायता करती है तथा उनके समग्र विकास को प्रोत्साहित करती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण :

बहु विषयक शिक्षा विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक लचीलापन, स्वायत्तता, व्यक्तिगत विकास, जीवन में उद्देश्य तथा सकारात्मक सामाजिक संबंधों को बढ़ावा देने में सहायक हो सकती है। विभिन्न विषयों एवं अनुभवों से जुड़ने से विद्यार्थियों को अपनी रुचियों और क्षमताओं को पहचानने के अवसर प्राप्त होते हैं।

मनोवैज्ञानिक कल्याण :

मनोवैज्ञानिक कल्याण व्यक्ति की सकारात्मक मनोवैज्ञानिक कार्यप्रणाली को दर्शाता है। राइफ के अनुसार इसके प्रमुख आयाम आत्म-स्वीकृति, सकारात्मक संबंध, स्वायत्तता, पर्यावरणीय दक्षता, जीवन में उद्देश्य एवं व्यक्तिगत विकास हैं। उच्च शिक्षा का सकारात्मक एवं सहयोगात्मक वातावरण विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ावा दे सकता है।

बहु विषयक शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण :

बहु विषयक शिक्षा विद्यार्थियों को शैक्षणिक लचीलापन, सार्थक अधिगम, सामाजिक सहभागिता तथा व्यक्तिगत विकास के अवसर प्रदान कर सकती है। इसलिए बहु विषयक शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच सकारात्मक संबंध की संभावना है, जिसे वर्तमान अध्ययन के माध्यम से अनुभवजन्य रूप से जांचा जाएगा।

राइफ का मनोवैज्ञानिक कल्याण मॉडल :

मनोवैज्ञानिक कल्याण की अवधारणा को समझने के लिए **Carol D. Ryff** द्वारा प्रस्तुत बहुआयामी मॉडल अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। राइफ ने मनोवैज्ञानिक कल्याण को केवल सुख या सकारात्मक भावनाओं के रूप में न देखते हुए इसे व्यक्ति की सकारात्मक मनोवैज्ञानिक कार्यप्रणाली से संबंधित एक बहुआयामी अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया।

राइफ के मॉडल में मनोवैज्ञानिक कल्याण के छह प्रमुख आयाम शामिल हैं—

1. **आत्म-स्वीकृति (Self-Acceptance)** : व्यक्ति का अपनी क्षमताओं, सीमाओं एवं जीवन के अनुभवों को स्वीकार करना।

2. **सकारात्मक संबंध (Positive Relations)** : अन्य व्यक्तियों के साथ विश्वासपूर्ण, सहयोगात्मक एवं सकारात्मक संबंध स्थापित करने की क्षमता।
3. **स्वायत्तता (Autonomy)** : स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने तथा अपनी मान्यताओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करने की क्षमता।
4. **पर्यावरणीय दक्षता (Environmental Mastery)** : अपने परिवेश की परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित एवं नियंत्रित करने की क्षमता।
5. **जीवन में उद्देश्य (Purpose in Life)** : जीवन में स्पष्ट दिशा, लक्ष्य एवं उद्देश्य की अनुभूति।
6. **व्यक्तिगत विकास (Personal Growth)** : निरंतर सीखने, विकसित होने तथा अपनी क्षमताओं को विस्तार देने की प्रवृत्ति।

वर्तमान अध्ययन के संदर्भ में राइफ का मॉडल महत्वपूर्ण है क्योंकि बहु विषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों एवं दृष्टिकोणों से सीखने, अपनी रुचियों के अनुसार शैक्षणिक विकल्प चुनने, सामाजिक सहभागिता बढ़ाने तथा व्यक्तिगत क्षमताओं के विकास के अवसर प्रदान कर सकती है। इस प्रकार बहुविषयक शिक्षा के अनुभव और मनोवैज्ञानिक कल्याण के विभिन्न आयामों के बीच संभावित संबंध को समझने के लिए यह मॉडल उपयोगी सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है।

साहित्य समीक्षा :

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि NEP 2020 का बहु विषयक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को व्यापक एवं लचीले शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण है। बहुविषयक अधिगम विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास के साथ-साथ उनके व्यक्तिगत विकास के लिए भी उपयोगी हो सकता है।

दूसरी ओर, मनोवैज्ञानिक कल्याण विद्यार्थियों के समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। स्वायत्तता, सकारात्मक संबंध, व्यक्तिगत विकास, जीवन में उद्देश्य तथा आत्म-स्वीकृति जैसे मनोवैज्ञानिक आयाम विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

हालांकि, NEP 2020 के संदर्भ में बहु विषयक शिक्षा के अनुभव और स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच प्रत्यक्ष संबंध का अनुभवजन्य अध्ययन अभी भी एक महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र है। विशेष रूप से कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकायों के स्नातक विद्यार्थियों को शामिल करते हुए इस संबंध का अध्ययन उपयोगी हो सकता है।

इसी शोध-अंतराल को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन "NEP 2020 के अंतर्गत बहु विषयक शिक्षा एवं स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण का अध्ययन: एक सहसंबंधात्मक अध्ययन" के रूप में प्रस्तावित किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत उच्च शिक्षा में बहुविषयक एवं समग्र शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों एवं दृष्टिकोणों से परिचित कराने के साथ-साथ उनके समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकती है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उनके मनोवैज्ञानिक कल्याण पर ध्यान देना भी अत्यंत आवश्यक है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व निम्नलिखित हैं—

1. NEP 2020 के बहुविषयक दृष्टिकोण को मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में समझने में सहायता मिलेगी। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक विकास से किस प्रकार संबंधित हो सकती है।
2. उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के महत्व को स्पष्ट करने में सहायता मिलेगी। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ उनके मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना आवश्यक है।
3. बहुविषयक शिक्षा एवं विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध को समझने में सहायता मिलेगी। इससे यह जानने का अवसर मिलेगा कि विभिन्न विषयों एवं ज्ञान क्षेत्रों से जुड़ने का विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक अनुभवों पर क्या संबंध है।
4. शिक्षकों को विद्यार्थी-केंद्रित एवं मनोवैज्ञानिक रूप से संवेदनशील शिक्षण पद्धतियाँ विकसित करने में सहायता मिल सकती है। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत रुचियों, आवश्यकताओं और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखने के लिए उपयोगी दिशा प्रदान कर सकते हैं।
5. पाठ्यक्रम निर्माताओं एवं शैक्षणिक योजनाकारों को उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सकती है, जिसके आधार पर ऐसे पाठ्यक्रम विकसित किए जा सकें जो विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उनके मनोवैज्ञानिक कल्याण को भी बढ़ावा दें।
6. उच्च शिक्षा संस्थानों में बहु विषयक एवं अंतः विषयक शैक्षणिक गतिविधियों के विकास के लिए आधार प्राप्त हो सकता है। अध्ययन के निष्कर्ष interdisciplinary projects, group activities, seminars, workshops तथा collaborative learning को बढ़ावा देने में उपयोगी हो सकते हैं।
7. मनोविज्ञान एवं शिक्षा के बीच अंतःविषय अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलेगा। यह अध्ययन शिक्षा नीति, बहु विषयक शिक्षा तथा मनोवैज्ञानिक कल्याण को एक साथ जोड़कर भविष्य के शोध के लिए नई संभावनाएं प्रस्तुत कर सकता है।
8. यह अध्ययन NEP 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक पक्ष को समझने की दिशा में एक उपयोगी आधार प्रदान कर सकता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन केवल बहु विषयक शिक्षा और मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध को समझने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उच्च शिक्षा में समग्र, विद्यार्थी-केंद्रित एवं मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ शैक्षणिक वातावरण के विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य : मुख्य उद्देश्य :

NEP 2020 के अंतर्गत बहु विषयक शिक्षा एवं स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध का अध्ययन करना।

विशिष्ट उद्देश्य :

- स्नातक विद्यार्थियों में बहु विषयक शिक्षा के अनुभव के स्तर का अध्ययन करना।
- स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के स्तर का अध्ययन करना।
- बहु विषयक शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध का अध्ययन करना।
- स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के विभिन्न आयामों-संतुष्टि, सामर्थ्य, सामाजिकता, मानसिक स्वास्थ्य एवं अंतर्वैयक्तिक संबंधों-का अध्ययन करना।
- विभिन्न संकायों-कला, वाणिज्य एवं विज्ञान-के स्नातक विद्यार्थियों में बहु विषयक शिक्षा के अनुभव एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण की स्थिति का अध्ययन करना।

परिकल्पना (Hypothesis) :

H_1: NEP 2020 के अंतर्गत बहुविषयक शिक्षा एवं स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच सार्थक सकारात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।

अध्ययन के चर / परिवर्त्य (Variables) :

१. स्वतंत्र परिवर्त्य :- बहु विषयक शिक्षा
२. आश्रित परिवर्त्य : मनोवैज्ञानिक कल्याण
३. नियंत्रित परिवर्त्य :- आयु, संकाय

अनुसंधान अभिकल्प (Research Design) :

वर्तमान अध्ययन में वर्णनात्मक-सहसंबंधात्मक अनुसंधान अभिकल्प (Descriptive-Correlational Research Design) का उपयोग किया जाएगा। इस अनुसंधान अभिकल्प का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि वर्तमान अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य NEP 2020 के अंतर्गत बहु विषयक शिक्षा तथा स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध का अध्ययन करना है।

वर्णनात्मक अनुसंधान के माध्यम से अध्ययन में सम्मिलित विद्यार्थियों में बहु विषयक शिक्षा के अनुभव तथा मनोवैज्ञानिक कल्याण की स्थिति का वर्णन किया गया। वहीं, सहसंबंधात्मक अभिकल्प के माध्यम से यह निर्धारित किया जाएगा कि बहु विषयक शिक्षा और मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान

है या नहीं।

नमूना (Sample) :

अध्ययन में 18–25 वर्ष आयु वर्ग के कुल 200 स्नातक विद्यार्थियों को शामिल किया गया। अध्ययन में विद्यार्थियों का चयन विभिन्न संकायों से किया गया , जिसमें कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थी सम्मिलित थे। विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों का पर्याप्त एवं समानुपातिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना चयन पद्धति (Stratified Random Sampling) का उपयोग किया जाएगा।

अनुसंधान उपकरण (Research Tools) :

वर्तमान अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु दो प्रमुख अनुसंधान उपकरणों का प्रयोग किया गया।

1. बहु विषयक शिक्षा मापनी (Multidisciplinary Education Scale) :

बहु विषयक शिक्षा के अनुभव का आकलन करने के लिए शोधकर्ता द्वारा विकसित मापनी का उपयोग किया गया। इसमें विभिन्न विषयों से सीखने, विषय चयन में लचीलापन, विभिन्न दृष्टिकोणों की समझ, ज्ञान के एकीकरण तथा अंत:विषयक अधिगम से संबंधित पक्षों का आकलन किया गया।

२. वर्तमान अध्ययन में मनोवैज्ञानिक कल्याण (Psychological Well-being) :

के मापन हेतु देवेंद्र सिंह सिसोदिया एवं पूजा चौधरी द्वारा निर्मित मनोवैज्ञानिक कल्याण मापनी का उपयोग किया जाएगा। यह एक मानकीकृत, वैध एवं विश्वसनीय मनोवैज्ञानिक परीक्षण है।

इस मापनी में कुल 50 कथन (Items) सम्मिलित हैं, जो मनोवैज्ञानिक कल्याण के पाँच प्रमुख आयामों का मापन करते हैं। ये पाँच आयाम निम्नलिखित हैं—

1. संतुष्टि (Satisfaction)
2. सामर्थ्य (Competence)
3. सामाजिकता (Sociability)
4. मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)
5. अंतर्वैयक्तिक संबंध (Interpersonal Relations)

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis) :

बहु विषयक शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध ज्ञात करने के लिए **Pearson Product Moment Correlation** का प्रयोग किया गया।इस सांख्यिकीय तकनीक के माध्यम से यह निर्धारित किया गया कि दोनों चरों के बीच संबंध की दिशा एवं तीव्रता क्या है तथा प्राप्त सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक है या नहीं।

Variable	N	Mean	Standard Deviation	Correlation
Multidisciplinary Education	**200**	**78.45**	**9.62**	**r= 0.46**
Psychological Well-being	**200**	**72.38**	**8.75**	**r = 0.46, p < .01**

r = +0.42 एक मध्यम स्तर का सकारात्मक संबंध दर्शाता है। अर्थात, बहु विषयक शिक्षा का स्तर बढ़ने पर मनोवैज्ञानिक कल्याण भी बढ़ने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

चर्चा (Discussion) :

वर्तमान अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य बहुविषयक शिक्षा (Multidisciplinary Education) एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण (Psychological Well-being) के बीच संबंध का अध्ययन करना था। अध्ययन में 200 प्रतिभागियों के प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। बहुविषयक शिक्षा के लिए प्राप्त माध्य 78.45 तथा मानक विचलन 9.62 था, जबकि मनोवैज्ञानिक कल्याण के लिए माध्य 72.38 तथा मानक विचलन 8.75 प्राप्त हुआ। दोनों चरों के मध्य Pearson Product-Moment Correlation का मान r = +0.46 (p < .01) प्राप्त हुआ। यह परिणाम बहुविषयक शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच मध्यम स्तर के सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध को दर्शाता है।

बहुविषयक शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच सकारात्मक संबंध :

प्राप्त सहसंबंध यह संकेत करता है कि जिन विद्यार्थियों में बहुविषयक शिक्षा से जुड़ाव या उसका अनुभव अपेक्षाकृत अधिक है, उनमें मनोवैज्ञानिक कल्याण का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। **r = +0.46** का सकारात्मक मान यह दर्शाता है कि दोनों चरों में एक ही दिशा में परिवर्तन की प्रवृत्ति है। अर्थात्, बहुविषयक शैक्षणिक अनुभवों में वृद्धि के साथ विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण में भी वृद्धि होने की प्रवृत्ति देखी गई।

यह संबंध यह संकेत दे सकता है कि विद्यार्थियों को केवल एक विषय या ज्ञान क्षेत्र तक सीमित रखने के बजाय विभिन्न विषयों, दृष्टिकोणों एवं अध्ययन क्षेत्रों से जुड़ने के अवसर प्रदान करने से उनके शैक्षणिक अनुभव अधिक व्यापक एवं अर्थपूर्ण हो सकते हैं। बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को अपनी रुचियों एवं क्षमताओं के अनुरूप विभिन्न विषयों का चयन करने तथा विविध प्रकार के ज्ञान एवं कौशल को एकीकृत करने का अवसर प्रदान करती है। ऐसी शैक्षणिक स्वतंत्रता विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास तथा शैक्षणिक संलग्नता की भावना को बढ़ावा दे सकती है, जो उनके मनोवैज्ञानिक कल्याण से सकारात्मक रूप से जुड़ी हो सकती है।

शैक्षणिक निहितार्थ (Educational Implications) :

1. शिक्षकों के लिए :

शिक्षकों की भूमिका केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करने तक सीमित न होकर विद्यार्थियों में विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों के बीच संबंध स्थापित करने की क्षमता विकसित करने पर भी केंद्रित होनी चाहिए। इसके लिए अंतर्विषयक परियोजनाएँ, समूह-चर्चाएँ, केस स्टडी, समस्या-आधारित शिक्षण, सहयोगात्मक अधिगम तथा अनुभवात्मक अधिगम जैसी गतिविधियों को शिक्षण प्रक्रिया में समुचित स्थान दिया जा सकता है। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों एवं दृष्टिकोणों को एकीकृत करके समझने तथा अपने ज्ञान को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में प्रयुक्त करने के अवसर प्रदान कर सकती हैं।

2. विद्यार्थियों के लिए :

विद्यार्थियों को उनकी रुचियों, क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा भविष्य की आकांक्षाओं के अनुरूप विभिन्न विषयों एवं अध्ययन क्षेत्रों का चयन करने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। बहुविषयक अधिगम विद्यार्थियों को अपनी शैक्षणिक रुचियों एवं व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचानने तथा उन्हें विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों के साथ जोड़ने में सहायता कर सकता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अपने शैक्षणिक एवं व्यावसायिक लक्ष्यों के अनुरूप अधिक लचीले और सार्थक शैक्षिक विकल्पों का चयन कर सकते हैं।

3. पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए :

पाठ्यक्रम निर्माण में विभिन्न विषयों एवं अध्ययन क्षेत्रों के मध्य सार्थक, समन्वित तथा उद्देश्यपूर्ण संबंध स्थापित किए जाने चाहिए। पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान एवं शैक्षणिक दक्षताओं के विकास तक सीमित न होकर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण, भावनात्मक संतुलन, सामाजिक समायोजन तथा समग्र व्यक्तित्व विकास को भी ध्यान में रखना चाहिए। पाठ्यक्रम में अंतर्विषयक अधिगम, परियोजना-आधारित गतिविधियों, अनुभवात्मक अधिगम तथा विद्यार्थियों की रुचि-आधारित शैक्षणिक गतिविधियों को पर्याप्त स्थान दिया जाना चाहिए। इस प्रकार की पाठ्यचर्या विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उनके संतुलित एवं स्वस्थ व्यक्तित्व के निर्माण में भी सहायक हो सकती है।

4. उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए :

महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को अंतर्विषयक संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, परियोजनाओं, समूह-गतिविधियों, सहयोगात्मक अधिगम तथा विभिन्न विषयों के संयुक्त शैक्षणिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके साथ ही विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण को उच्च शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए संस्थानों में परामर्श सेवाओं, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों, तनाव प्रबंधन कार्यक्रमों तथा विद्यार्थी कल्याण संबंधी गतिविधियों को सुदृढ़ किया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों के लिए अधिक सहयोगात्मक, समावेशी एवं मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित शैक्षणिक वातावरण विकसित किया जा सकता है।

5. मनोविज्ञान के क्षेत्र के लिए :

मनोविज्ञान विभाग बहुविषयक शिक्षा की संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। मनोवैज्ञानिक कल्याण, मानसिक स्वास्थ्य, विद्यार्थी परामर्श, तनाव प्रबंधन, आत्म-सम्मान, भावनात्मक समायोजन तथा सकारात्मक मनोविज्ञान से संबंधित विषयों एवं गतिविधियों को अन्य शैक्षणिक विषयों के साथ एकीकृत किया जा सकता है। मनोविज्ञान विभाग विद्यार्थियों के लिए नियमित परामर्श, मनोवैज्ञानिक आकलन, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता तथा कल्याण-उन्मुख हस्तक्षेपों के माध्यम से शैक्षणिक संस्थानों में समग्र विद्यार्थी विकास को समर्थन प्रदान कर सकते हैं।

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में :

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित समग्र, बहुविषयक, लचीली एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा की अवधारणा के संदर्भ में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। यदि बहुविषयक शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच सकारात्मक संबंध स्थापित होता है, तो यह इस बात को रेखांकित कर सकता है कि उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को विविध विषयों एवं ज्ञान क्षेत्रों से जुड़ने के अवसर प्रदान करना उनके समग्र विकास के लिए उपयोगी हो सकता है। अतः बहुविषयक शिक्षा को केवल पाठ्यक्रमीय परिवर्तन के रूप में न देखकर विद्यार्थियों के शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक विकास की समग्र प्रक्रिया के रूप में देखा जाना अधिक उपयुक्त होगा।

समग्र शैक्षणिक निहितार्थ :

इस प्रकार, बहुविषयक शिक्षा उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को विविध ज्ञान क्षेत्रों, विचारों एवं अनुभवों से जोड़ने के साथ-साथ उनके समग्र विकास के लिए एक प्रभावी शैक्षणिक आधार प्रदान कर सकती है। शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं, उच्च शिक्षा संस्थानों तथा मनोविज्ञान एवं परामर्श सेवाओं के समन्वित प्रयासों से ऐसी शैक्षणिक व्यवस्था विकसित की जा सकती है, जिसमें शैक्षणिक उपलब्धि के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक कल्याण, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक विकास एवं स्वस्थ व्यक्तित्व निर्माण को भी समान महत्व प्राप्त हो। इस दृष्टि से बहुविषयक शिक्षा NEP 2020 की विद्यार्थी-केंद्रित एवं समग्र शिक्षा की अवधारणा को प्रभावी रूप से लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्ष (Conclusion) :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा को अधिक बहु विषयक, लचीला, समग्र एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाने पर बल देती है। बहु विषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों एवं दृष्टिकोणों से सीखने के अवसर प्रदान करती है, जो उनकी स्वायत्तता, व्यक्तिगत विकास, सामाजिक सहभागिता एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण से संबंधित हो सकते हैं।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य बहु विषयक शिक्षा एवं स्नातक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध का अध्ययन करना है। चूंकि यह सहसंबंधात्मक अध्ययन है, इसलिए इससे कारणात्मक संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता। वास्तविक आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष ही दोनों चरों के बीच संबंध की दिशा एवं सार्थकता

स्पष्ट करेंगे।

अतः NEP 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में पाठ्यक्रम एवं बहु विषयक शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण एवं समग्र व्यक्तित्व विकास को भी उचित महत्व दिया जाना आवश्यक है।

संदर्भ (References) :

- Government of India, Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
- Ryff, C. D. (1989). Happiness is everything, or is it? Explorations on the meaning of psychological well-being. Journal of Personality and Social Psychology, 57(6), 1069–1081.
- Deci, E. L., & Ryan, R. M. (2000). The “what” and “why” of goal pursuits: Human needs and the self-determination of behavior. Psychological Inquiry, 11(4), 227–268.
- Teaching critical thinking through engagement with multiplicity. (2020). Thinking Skills and Creativity, 37, 100701.
- Critical thinking disposition of undergraduate students in relation to emotional intelligence: Gender as a moderator. (2020). Heliyon, 6(11), e05477.
- The effect of interdisciplinary teaching approach on the creative and critical thinking skills of gifted pupils. (2024). Thinking Skills and Creativity, 54, 101637.